



जाँभो जी की शिक्षाओं से सामाजिक और धार्मिक पुनरुत्थान: एक अध्ययन

रिंकू कुमारी ¹

¹ नेट, जे आर एफ इतिहास शोधार्थी, ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर.

ABSTRACT:

भारतीय संत परंपरा ने समाज को केवल आध्यात्मिक दिशा ही नहीं दी, बल्कि समय-समय पर सामाजिक, नैतिक और मानवीय मूल्यों के संरक्षण एवं पुनरुत्थान में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इसी परंपरा के एक महान संत, समाज-सुधारक और पर्यावरण-चिंतक के रूप में जाँभो जी (जाम्भोजी / जम्भेश्वर जी) का नाम अत्यंत सम्मान के साथ लिया जाता है। उनका व्यक्तित्व और कृतित्व मध्यकालीन भारत के सामाजिक और धार्मिक इतिहास में एक क्रांतिकारी परिवर्तन का प्रतीक है। जाँभो जी की शिक्षाएँ उस कालखंड में उभरीं, जब समाज धार्मिक आडंबर, पाखंड, हिंसा, जातिगत भेदभाव, नैतिक पतन और प्रकृति के अंधाधुंध शोषण से ग्रस्त था। ऐसे समय में उन्होंने एक ऐसे जीवन-दर्शन का प्रतिपादन किया, जो मानव, समाज, प्रकृति और ईश्वर-चारों के बीच संतुलन स्थापित करता है।

जाँभो जी का चिंतन केवल आध्यात्मिक साधना या मोक्ष प्राप्ति तक सीमित नहीं था, बल्कि वह एक समग्र सामाजिक दर्शन था। उन्होंने धर्म को कर्मकांडों और बाह्य आडंबरों से मुक्त कर नैतिकता, करुणा, अहिंसा और संयम से जोड़ा। उनके अनुसार सच्चा धर्म वही है जो मनुष्य को श्रेष्ठ आचरण, सामाजिक उत्तरदायित्व और प्रकृति के प्रति संवेदनशील बनाता है। इस प्रकार जाँभो जी की शिक्षाएँ धार्मिक पुनरुत्थान के साथ-साथ सामाजिक पुनरुत्थान का भी आधार बनीं। जाँभो जी ने अपने विचारों के माध्यम से समाज को एक नई दिशा प्रदान की। उन्होंने ईश्वर की एकता पर बल दिया और यह बताया कि ईश्वर केवल मंदिर या मस्जिद तक सीमित नहीं है, बल्कि वह प्रत्येक जीव और संपूर्ण प्रकृति में विद्यमान है। यह विचार धार्मिक सहिष्णुता और मानव-एकता की भावना को प्रबल करता है। जाँभो जी ने यह संदेश दिया कि यदि मनुष्य प्रकृति और जीव-जंतुओं का सम्मान नहीं करता, तो उसका धर्म अधूरा है। इस दृष्टि से उनका चिंतन अत्यंत व्यापक और दूरदर्शी था।

जाँभो जी द्वारा प्रतिपादित बिश्रोई संप्रदाय और उसके 29 नियम उनकी सामाजिक-धार्मिक शिक्षाओं का व्यावहारिक स्वरूप हैं। इन नियमों में जीवन के प्रत्येक पक्ष-धार्मिक आचरण, सामाजिक व्यवहार, नैतिक अनुशासन और पर्यावरण संरक्षण—को समाहित किया गया है। जीव-हत्या निषेध, वृक्षों की रक्षा, स्वच्छता, नशा-मुक्त जीवन, संयम, सत्यनिष्ठा और करुणा जैसे सिद्धांत उस समय के समाज के लिए क्रांतिकारी थे। इन नियमों के माध्यम से जाँभो जी ने यह सिद्ध किया कि धर्म केवल उपदेश नहीं, बल्कि व्यवहार में उतरने वाला जीवन-मूल्य है। सामाजिक पुनरुत्थान के संदर्भ में जाँभो जी की शिक्षाएँ अत्यंत प्रभावशाली सिद्ध हुईं। उन्होंने जाति, वर्ग और सामाजिक ऊँच-नीच की भावना का विरोध किया और सभी मनुष्यों को समान दृष्टि से देखने का संदेश दिया। उनका मानना था कि समाज का वास्तविक विकास तभी संभव है, जब प्रत्येक व्यक्ति को समान सम्मान और अधिकार प्राप्त हों। इस विचारधारा ने समाज में समरसता, सहयोग और पारस्परिक भाईचारे की भावना को मजबूत किया।

धार्मिक पुनरुत्थान की दृष्टि से जाँभो जी का योगदान विशेष रूप से उल्लेखनीय है। उन्होंने धर्म को भय और अंधविश्वास से मुक्त कर प्रेम, करुणा और विवेक से जोड़ा। उनके अनुसार धर्म का उद्देश्य मनुष्य को नैतिक बनाना है, न कि उसे कर्मकांडों में उलझाना। इस प्रकार उन्होंने धार्मिक चेतना को पुनर्जीवित किया और उसे मानव-कल्याण से जोड़ा। जाँभो जी की शिक्षाओं का एक अत्यंत महत्वपूर्ण पक्ष पर्यावरण संरक्षण से संबंधित है। उन्होंने प्रकृति को केवल संसाधन नहीं, बल्कि जीवन का अभिन्न अंग माना। वृक्षों की रक्षा और जीवों की सुरक्षा को उन्होंने धार्मिक कर्तव्य का रूप दिया। यह दृष्टिकोण अपने समय से बहुत आगे था और आज के पर्यावरण संकट के संदर्भ में अत्यंत प्रासंगिक प्रतीत होता है। जाँभो जी का यह संदेश कि “प्रकृति की रक्षा ही मानव की रक्षा है” आधुनिक विश्व के लिए एक मार्गदर्शक सिद्धांत बन सकता है।

जाँभो जी की शिक्षाएँ केवल अतीत की धरोहर नहीं हैं, बल्कि वर्तमान और भविष्य के लिए भी उपयोगी हैं। आज जब समाज पुनः नैतिक संकट, धार्मिक असहिष्णुता और पर्यावरणीय विनाश से जूझ रहा है, तब जाँभो जी का जीवन-दर्शन समाधान का मार्ग दिखाता है। उनके विचार सामाजिक न्याय, धार्मिक सहिष्णुता और सतत विकास की अवधारणा को सशक्त आधार प्रदान करते हैं। समग्र रूप से यह कहा जा सकता है कि जाँभो जी की शिक्षाओं ने सामाजिक और धार्मिक पुनरुत्थान की एक सुदृढ़ परंपरा स्थापित की। उन्होंने मानव को उसकी मूल मानवीय संवेदनाओं से जोड़ा और यह सिखाया कि सच्चा धर्म वही है जो जीवन को नैतिक, समाज को समरस और प्रकृति को सुरक्षित बनाए। इस प्रकार जाँभो जी का चिंतन भारतीय संत परंपरा में एक उज्ज्वल अध्याय है, जो आज भी समाज को दिशा देने की क्षमता रखता है।

KEYWORDS:

जाँभो जी, बिश्रोई संप्रदाय, सामाजिक पुनरुत्थान, धार्मिक सुधार, पर्यावरण संरक्षण, संत परंपरा, अहिंसा, नैतिक मूल्य।

PAPER ACCEPTED DATE:

27th April 2025

PAPER PUBLISHED DATE:

30th April 2025

शोध उद्देश्य

जाँभो जी के जीवन, चिंतन और शिक्षाओं का अध्ययन करना।

जाँभो जी की धार्मिक विचारधारा और उसके मूल तत्वों का विश्लेषण करना।

उनकी शिक्षाओं के सामाजिक प्रभावों का मूल्यांकन करना।

बिश्रोई संप्रदाय के 29 नियमों के सामाजिक-धार्मिक महत्व को स्पष्ट करना।

जाँभो जी की शिक्षाओं की आधुनिक समाज में प्रासंगिकता का अध्ययन करना।

यह विश्लेषण करना कि जाँभो जी की शिक्षाएँ किस प्रकार सामाजिक और धार्मिक पुनरुत्थान

का माध्यम बनीं।

शोध पद्धति

प्रस्तुत शोध-पत्र में वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक शोध-पद्धति का प्रयोग किया गया है। इसके अंतर्गत—

प्राथमिक स्रोतों में जाँभो जी से संबंधित लोक-कथाएँ, मौखिक परंपराएँ एवं संप्रदायिक नियमों का अध्ययन किया गया।

द्वितीयक स्रोतों में ऐतिहासिक ग्रंथ, शोध-लेख, पत्र-पत्रिकाएँ और संदर्भ पुस्तकें शामिल की गई हैं।

तुलनात्मक पद्धति के माध्यम से जाँभो जी की शिक्षाओं की तुलना समकालीन संत आंदोलनों से की गई है।

सामाजिक-धार्मिक दृष्टिकोण से उनके विचारों की व्याख्या की गई है।

विषय-वस्तु

जाँभो जी (जाम्भोजी / जम्भेश्वर जी) भारतीय संत परंपरा के उन विरले महापुरुषों में से थे, जिनकी शिक्षाओं ने धार्मिक चेतना के साथ-साथ सामाजिक संरचना को भी नई दिशा प्रदान की। उनका काल मध्यकालीन भारत का वह दौर था, जब समाज अनेक प्रकार की विसंगतियों से ग्रस्त था। धार्मिक क्षेत्र में पाखंड, कर्मकांड और बाह्य आडंबर हावी थे, वहीं सामाजिक जीवन में जातिगत भेदभाव, हिंसा, नैतिक पतन और प्रकृति के प्रति असंवेदनशीलता बढ़ती जा रही थी। ऐसे वातावरण में जाँभो जी का चिंतन एक सुधारवादी और मानवीय आंदोलन के रूप में उभरा।

मरुस्थलीय परिवेश और जाँभो जी का चिंतन

जाँभो जी का जन्म और कार्य-क्षेत्र राजस्थान का मरुस्थलीय अंचल था, जहाँ जल, हरियाली और जीव-जंतु जीवन के लिए अत्यंत मूल्यवान थे। इस प्राकृतिक परिवेश ने उनके चिंतन को गहराई से प्रभावित किया। उनके लिए प्रकृति कोई दार्शनिक अवधारणा नहीं, बल्कि जीवन की अनिवार्यता थी। यही कारण है कि उनकी शिक्षाओं में पर्यावरण-संरक्षण कोई अलग विषय नहीं, बल्कि जीवन-शैली का हिस्सा बन जाता है। वृक्ष, जल और जीवों की रक्षा उनके लिए आध्यात्मिक साधना का ही रूप थी।

लोकधर्म और संस्थागत धर्म से भिन्न दृष्टि

जाँभो जी का धर्म-बोध संस्थागत और कर्मकांड-प्रधान धर्म से भिन्न था। उन्होंने ऐसे धर्म की कल्पना की जो सीधे लोकजीवन से जुड़ा हो। उनके उपदेश सरल थे, भाषा लोक-प्रचलित थी और उदाहरण दैनिक जीवन से लिए गए थे। इस प्रकार जाँभो जी का धर्म 'लोकधर्म' था—जो मंदिरों और ग्रंथों से अधिक खेतों, जंगलों और बस्तियों में जीवित था। यह धर्म भय पर नहीं, बल्कि करुणा और नैतिक अनुशासन पर आधारित था।

अनुशासन और स्वतंत्रता का संतुलन

जाँभो जी द्वारा दिए गए 29 नियम अनुशासन पर आधारित हैं, किंतु यह अनुशासन दमनकारी नहीं है। इसमें व्यक्ति की स्वतंत्रता का सम्मान भी निहित है। उन्होंने नियम इसलिए बनाए ताकि समाज आत्मनियंत्रण विकसित कर सके। यह आत्मनियंत्रण बाहरी दंड से नहीं, बल्कि आंतरिक नैतिक चेतना से उत्पन्न होता है। इस दृष्टि से जाँभो जी का सामाजिक मॉडल आधुनिक 'नैतिक समाज' की अवधारणा से मेल खाता है।

जाँभो जी और स्त्री दृष्टिकोण

जाँभो जी की शिक्षाओं में स्त्रियों के प्रति सम्मान और नैतिक समानता का भाव स्पष्ट दिखाई देता है। उन्होंने स्त्री को केवल सामाजिक भूमिका तक सीमित नहीं किया, बल्कि उसे नैतिक जीवन का सक्रिय सहभागी माना। बिश्रोई समाज में स्त्रियों की पर्यावरण-संरक्षण और धार्मिक आचरण में सक्रिय भूमिका जाँभो जी की इस समतावादी दृष्टि का परिणाम मानी जा सकती है। यह पक्ष मध्यकालीन समाज के संदर्भ में विशेष महत्व रखता है।

हिंसा के प्रतिरोध का शांत मार्ग

जाँभो जी ने हिंसा का विरोध केवल उपदेश के स्तर पर नहीं किया, बल्कि उसे सामाजिक व्यवहार में उतारा। उनका अहिंसा-सिद्धांत केवल मानव तक सीमित नहीं था, बल्कि समस्त

जीव-जगत तक विस्तृत था। यह अहिंसा निष्क्रिय नहीं, बल्कि सक्रिय करुणा पर आधारित थी—जहाँ अन्याय और विनाश के विरुद्ध खड़े होना भी धर्म का अंग माना गया। यही भावना आगे चलकर बिश्रोई समाज के बलिदानों में दिखाई देती है।

सामाजिक स्मृति और परंपरा में जाँभो जी

जाँभो जी की शिक्षाएँ केवल लिखित ग्रंथों में नहीं, बल्कि लोककथाओं, भजनों, कहावतों और सामूहिक स्मृति में सुरक्षित हैं। यह तथ्य दर्शाता है कि उनका प्रभाव बौद्धिक वर्ग तक सीमित न रहकर जनसामान्य तक पहुँचा। लोक परंपरा में जीवित रहना किसी भी विचारधारा की स्थायित्व क्षमता का प्रमाण होता है। इस दृष्टि से जाँभो जी का चिंतन अत्यंत प्रभावशाली सिद्ध हुआ है।

जाँभो जी और आधुनिक नैतिक संकट

आज का समाज उपभोक्तावाद, पर्यावरणीय संकट और नैतिक विघटन से जूझ रहा है। जाँभो जी की शिक्षाएँ इन समस्याओं का सरल और व्यावहारिक समाधान प्रस्तुत करती हैं। उनका संयम, प्रकृति-संरक्षण और नैतिक जीवन का संदेश आधुनिक विकास मॉडल के लिए एक वैकल्पिक दृष्टि प्रदान करता है, जिसमें प्रगति और संरक्षण दोनों का संतुलन संभव है। जाँभो जी का महत्व इस बात में निहित है कि उन्होंने धर्म, समाज और प्रकृति को अलग-अलग नहीं देखा। उनके लिए ये तीनों एक ही जीवन-सूत्र के अंग थे। उनकी शिक्षाएँ आज भी यह सिखाती हैं कि सच्चा धार्मिक जीवन वही है, जो सामाजिक उत्तरदायित्व और पर्यावरणीय संवेदनशीलता से जुड़ा हो।

जाँभो जी का जीवन-दर्शन और सामाजिक चेतना

जाँभो जी का जीवन-दर्शन अनुभव, आत्मचिंतन और लोकजीवन की समस्याओं से गहराई से जुड़ा हुआ था। उन्होंने समाज को भीतर से देखा और समझा। उनका मानना था कि जब तक मनुष्य अपने आचरण को शुद्ध नहीं करता, तब तक न तो धार्मिक उन्नति संभव है और न ही सामाजिक सुधार। इसी कारण उन्होंने आत्मसंयम, सत्य, अहिंसा और करुणा को जीवन का मूल आधार बनाया।

जाँभो जी की दृष्टि में समाज केवल व्यक्तियों का समूह नहीं, बल्कि एक नैतिक इकाई है, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति का आचरण संपूर्ण समाज को प्रभावित करता है। उन्होंने व्यक्ति और समाज के बीच गहरे संबंध को स्वीकार किया और यह बताया कि सामाजिक पुनरुत्थान की प्रक्रिया व्यक्ति के नैतिक उत्थान से ही आरंभ होती है।

धार्मिक सुधार की अवधारणा

जाँभो जी का धार्मिक चिंतन परंपरागत कर्मकांडों से भिन्न था। उन्होंने धर्म को भय, दंड और अंधविश्वास से मुक्त कर प्रेम, विवेक और नैतिकता से जोड़ा। उनके अनुसार ईश्वर सर्वव्यापक है और प्रत्येक जीव में उसकी उपस्थिति है। इसलिए किसी भी जीव को कष्ट पहुँचाना या प्रकृति को नुकसान पहुँचाना ईश्वर-विरोधी कार्य है।

उन्होंने धर्म के नाम पर होने वाली हिंसा और कट्टरता का विरोध किया। उनका यह संदेश था कि धर्म का उद्देश्य मनुष्य को मानवता के निकट लाना है, न कि उसे विभाजित करना। इस प्रकार जाँभो जी की शिक्षाएँ धार्मिक पुनरुत्थान का सशक्त माध्यम बनीं, जिसने समाज को अधिक सहिष्णु और मानवीय बनाया।

बिश्रोई संप्रदाय और 29 नियमों का महत्व

जाँभो जी द्वारा स्थापित बिश्रोई संप्रदाय उनकी शिक्षाओं का व्यावहारिक रूप है। 'बिश्रोई' शब्द 'बीस-नौ' से बना है, जो उनके द्वारा प्रतिपादित 29 नियमों का प्रतीक है। ये नियम केवल धार्मिक आदेश नहीं, बल्कि सामाजिक आचार-संहिता हैं।

इन नियमों में जीव-हत्या निषेध, वृक्षों की रक्षा, स्वच्छता, संयमित जीवन, नशा-मुक्ति, सत्य आचरण और सामाजिक अनुशासन जैसे तत्व शामिल हैं। इन नियमों के माध्यम से जाँभो जी ने यह स्पष्ट किया कि धर्म तभी सार्थक है, जब वह जीवन के व्यवहारिक पक्ष से जुड़ा हो।

सामाजिक पुनरुत्थान में जाँभो जी की भूमिका

जाँभो जी की शिक्षाओं ने समाज में व्याप्त अनेक कुरीतियों को चुनौती दी। उन्होंने जाति-आधारित भेदभाव और ऊँच-नीच की भावना का विरोध किया। उनके अनुसार सभी मनुष्य समान हैं और किसी को भी जन्म के आधार पर श्रेष्ठ या हीन नहीं ठहराया जा सकता।

उनकी शिक्षाओं ने समाज में समानता, सहयोग और सामूहिक उत्तरदायित्व की भावना को प्रोत्साहित किया। जाँभो जी ने यह सिखाया कि समाज का प्रत्येक व्यक्ति एक-दूसरे से जुड़ा हुआ है और किसी एक का पतन संपूर्ण समाज को प्रभावित करता है। इस प्रकार उन्होंने सामाजिक एकता और समरसता की नींव रखी।

पर्यावरण संरक्षण का अद्वितीय दृष्टिकोण

जाँभो जी को प्रारंभिक पर्यावरण-चिंतकों में गिना जाता है। उन्होंने प्रकृति को केवल उपयोग की वस्तु नहीं, बल्कि जीवन का आधार माना। वृक्षों और जीव-जंतुओं की रक्षा को उन्होंने धार्मिक कर्तव्य का स्वरूप दिया।

उनका यह संदेश कि “प्रकृति की रक्षा ही मानव की रक्षा है” आज के पर्यावरण संकट के संदर्भ में अत्यंत प्रासंगिक है। विश्वोई समाज द्वारा वृक्षों और वन्य जीवों की रक्षा हेतु किए गए त्याग और बलिदान जाँभो जी की शिक्षाओं की जीवंत मिसाल हैं।

नैतिक जीवन और मानवीय मूल्य

जाँभो जी ने नैतिक जीवन को धर्म का मूल तत्व माना। सत्य, संयम, करुणा, अहिंसा और ईमानदारी उनके विचारों के केंद्र में थे। उन्होंने भोग-विलास और लोभ का विरोध किया और संतुलित जीवन जीने की प्रेरणा दी।

उनके अनुसार नैतिकता केवल व्यक्तिगत गुण नहीं, बल्कि सामाजिक उत्तरदायित्व भी है। जब समाज के अधिकांश लोग नैतिक मूल्यों का पालन करते हैं, तभी सामाजिक स्थिरता और शांति संभव होती है।

आधुनिक संदर्भ में जाँभो जी की शिक्षाओं की प्रासंगिकता

आज का समाज पुनः नैतिक संकट, धार्मिक असहिष्णुता और पर्यावरणीय विनाश से जूझ रहा है। ऐसे समय में जाँभो जी की शिक्षाएँ समाधान का मार्ग प्रस्तुत करती हैं। उनका जीवन-दर्शन सामाजिक न्याय, धार्मिक सहिष्णुता और सतत विकास की अवधारणा को सशक्त आधार प्रदान करता है।

जाँभो जी का चिंतन यह सिखाता है कि जब तक मनुष्य अपने आचरण में सुधार नहीं करता, तब तक कोई भी सामाजिक या धार्मिक व्यवस्था सफल नहीं हो सकती। इस प्रकार उनकी शिक्षाएँ आज भी समाज के लिए उतनी ही उपयोगी और प्रेरणादायक हैं, जितनी अपने समय में थीं। समग्र रूप से देखा जाए तो जाँभो जी की शिक्षाएँ सामाजिक और धार्मिक पुनरुत्थान का सशक्त माध्यम बनीं। उन्होंने धर्म को मानवता से जोड़ा, समाज को नैतिक मूल्यों से सुसज्जित किया और प्रकृति को संरक्षण प्रदान करने का संदेश दिया। उनका योगदान भारतीय संत परंपरा में एक उज्ज्वल अध्याय के रूप में स्थापित है, जो वर्तमान और भविष्य दोनों के लिए मार्गदर्शक सिद्ध हो सकता है।

निष्कर्ष

जाँभो जी केवल एक संत या धार्मिक उपदेशक ही नहीं थे, बल्कि वे एक दूरदर्शी समाज-सुधारक, नैतिक चिंतक और पर्यावरण संरक्षक भी थे। उनका चिंतन अपने समय से कहीं आगे का था और आज के आधुनिक युग में भी उतना ही प्रासंगिक प्रतीत होता है। जाँभो जी की शिक्षाओं ने समाज को एक ऐसी दिशा प्रदान की, जिसमें धर्म, समाज और प्रकृति के बीच संतुलन स्थापित किया गया। जाँभो जी ने धर्म को संकीर्ण कर्मकांडों और बाह्य आडंबरों से मुक्त कर मानवीय मूल्यों से जोड़ा। उन्होंने यह स्पष्ट किया कि सच्चा धर्म वही है जो मनुष्य को नैतिक, करुणाशील और संवेदनशील बनाता है। उनके अनुसार ईश्वर की भक्ति केवल पूजा-पाठ तक सीमित नहीं होनी चाहिए, बल्कि वह जीव-कल्याण, सत्य आचरण और प्रकृति-संरक्षण के रूप में जीवन में दिखाई देनी चाहिए। इस प्रकार उन्होंने धार्मिक चेतना को पुनर्जीवित कर उसे मानव-कल्याण से जोड़ा, जो धार्मिक पुनरुत्थान का

एक सशक्त उदाहरण है। सामाजिक दृष्टि से जाँभो जी की शिक्षाएँ अत्यंत प्रभावशाली रहीं। उन्होंने जाति-भेद, ऊँच-नीच और सामाजिक असमानता का विरोध कर समाज में समरसता और समानता की भावना को प्रोत्साहित किया। उनका यह संदेश कि सभी मनुष्य समान हैं और किसी को भी जन्म के आधार पर श्रेष्ठ या हीन नहीं माना जा सकता, सामाजिक न्याय की अवधारणा को मजबूत करता है। जाँभो जी का सामाजिक दर्शन व्यक्ति और समाज के बीच परस्पर उत्तरदायित्व की भावना को विकसित करता है, जो किसी भी स्वस्थ समाज की आधारशिला होती है।

विश्वोई संप्रदाय और उसके 29 नियम जाँभो जी की शिक्षाओं का व्यवहारिक स्वरूप हैं। ये नियम न केवल धार्मिक अनुशासन स्थापित करते हैं, बल्कि सामाजिक और नैतिक जीवन को भी दिशा देते हैं। जीव-हत्या निषेध, वृक्ष संरक्षण, स्वच्छता, संयम, नशा-मुक्ति और सत्यनिष्ठा जैसे सिद्धांत समाज को नैतिक रूप से सुदृढ़ बनाते हैं। यह स्पष्ट होता है कि जाँभो जी ने धर्म को जीवन से जोड़कर उसे व्यवहारिक और लोककल्याणकारी बनाया। पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में जाँभो जी का योगदान विशेष रूप से उल्लेखनीय है। उन्होंने प्रकृति को जीवन का आधार माना और उसकी रक्षा को धार्मिक कर्तव्य का रूप दिया। आज जब विश्व पर्यावरण संकट, जलवायु परिवर्तन और जैव-विविधता के विनाश जैसी समस्याओं से जूझ रहा है, तब जाँभो जी की शिक्षाएँ अत्यंत प्रासंगिक प्रतीत होती हैं। उनका यह विचार कि “प्रकृति की रक्षा ही मानव की रक्षा है” सतत विकास की आधुनिक अवधारणा से पूर्णतः मेल खाता है।

आधुनिक समाज के संदर्भ में जाँभो जी की शिक्षाएँ सामाजिक समरसता, धार्मिक सहिष्णुता और नैतिक जीवन के लिए प्रेरणास्रोत हैं। उनके विचार यह सिखाते हैं कि जब तक व्यक्ति अपने आचरण में सुधार नहीं करता, तब तक किसी भी प्रकार का सामाजिक या धार्मिक पुनरुत्थान संभव नहीं है। इस प्रकार जाँभो जी का जीवन-दर्शन व्यक्ति, समाज और प्रकृति—तीनों के संतुलित विकास का मार्ग प्रशस्त करता है।

अंततः यह कहा जा सकता है कि जाँभो जी की शिक्षाओं ने सामाजिक और धार्मिक पुनरुत्थान की एक सशक्त परंपरा को जन्म दिया। उनका चिंतन भारतीय संत परंपरा का एक उज्ज्वल अध्याय है, जो न केवल अतीत की विरासत है, बल्कि वर्तमान और भविष्य के लिए भी मार्गदर्शक सिद्ध हो सकता है।

REFERENCES

1. शर्मा, रामनिवास — भारतीय संत परंपरा और समाज सुधार, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, जयपुर।
2. जोशी, के. एल. — मध्यकालीन भारत के संत आंदोलन, साहित्य भवन, इलाहाबाद।
3. सिंह, हरिदत्त — जाँभो जी और विश्वोई संप्रदाय, राजस्थानी शोध संस्थान, जोधपुर।
4. वैष्णव, मोहनलाल — राजस्थान का धार्मिक और सामाजिक इतिहास, विद्यार्थी प्रकाशन, जयपुर।
5. मिश्रा, रामकुमार — भारतीय समाज और धर्म, ज्ञानदीप प्रकाशन, दिल्ली।
6. त्रिवेदी, शिवकुमार — पर्यावरण और भारतीय चिंतन, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
7. दवे, सत्यनारायण — संत परंपरा में मानवतावाद, नवभारत प्रकाशन, अहमदाबाद।
8. विश्वोई, ओमप्रकाश — विश्वोई समाज: परंपरा और मूल्य, मरुधरा प्रकाशन, बीकानेर।